अध्याय 11

भोजन संबंधित नियम: शुद्ध और अशुद्ध जन्तु

लैव्यव्यवस्था 11 पुस्तक का एक नया खण्ड आरंभ करती है। पहले सात अध्याय मिलापवाले तम्बू में याजक द्वारा चढ़ाए जाने वाले चढ़ावों के बारे में थे। अध्याय 8 से 10 में याजकों और मिलापवाले तम्बू, जिसमें बलिदान चढ़ाए जाने थे, के अभिषेक के बारे में थे। अध्याय 10 का अन्त दो याजकों द्वारा यहोवा के निर्देशों के पालन को न करने के वृतान्त से होता है, जब अपने अभिषेक के पश्चात उन्होंने मिलापवाले तम्बू में "ऊपरी आग" अर्पित की। अध्याय 11 से 15 तक बलिदानों के विषय को छोड़कर शुद्ध और अशुद्ध के विषय को लिया गया है।

आरंभ होने पर, अध्याय 11 शुद्ध और अशुद्ध जन्तुओं की चर्चा करती है। अध्याय 12 बताता है कि किस प्रकार एक शिशु माँ की शुद्धता को प्रभावित करता था। अध्याय 13 और 14 व्यक्ति और वस्त्र और मकान में "कोढ़" के विषय पर हैं; और वे बताते हैं कि क्या किया जाना है यदि कोई वस्तु या व्यक्ति "कोढ़" द्वारा अशुद्ध हो गया है। अन्ततः, अध्याय 15 में दर्ज किया गया है कि शरीर के किसी स्राव के कारण यदि पुरुष अथवा स्त्री अशुद्ध हो गए हैं तो उसके लिए निर्धारित आवश्यकताएँ क्या थीं।

चाहे लैव्यव्यवस्था 11 में विषय बदल गया हो, पाठक को नए विषय के लिए तैयार किया गया है। अध्याय 10 में, याजकों को दायित्व दिया गया था कि वे लोगों को सिखाएँ "जिससे पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सकें" (10:10)। अध्याय 11 से 15 में देखा जा सकता है कि याजकों को इस्राएलियों को क्या सिखाना था जिससे वे "शुद्ध और अशुद्ध" में अन्तर को समझ सकें।

शुद्ध और अशुद्ध के विषय को दिया गया स्थान दिखाता है कि परमेश्वर के लिए यह महत्वपूर्ण था। ये निर्देश क्यों दिए गए? इस प्रश्न को बाद में लेंगे। पहले, परमेश्वर ने जो कहा उसे समझना महत्वपूर्ण है; उसके बाद पाठक यह समझने का प्रयास कर सकता है कि उसने ऐसा क्यों कहा।

शुद्ध और अशुद्ध को परिभाषित करते हुए, अध्याय का आरंभ पशुओं, पक्षियों, जल जन्तुओं, और कीड़ों को शुद्ध और अशुद्ध निर्धारित करने के साथ होता है। इसके पश्चात यह विवरण दिया गया है कि अशुद्धता कैसे मनुष्यों को लग सकती है, और यदि ऐसा हो जाए तो क्या किया जाना चाहिए।

अध्याय का अन्त शुद्ध जंतुओं को पहचानने के उद्देश्य के साथ होता है। परमेश्वर परिभाषित कर रहा था कि उसके लोग क्या खा सकते थे और उनके लिए क्या खाना वर्जित था (11:46, 47)।

भोजन के लिए ग्रहणयोग्य जन्तु पहचानना (11:1-23)

श्रेणी 1: पशु (11:1-8)

[1]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"इस्राएलियों से कहो: जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो। [3]पशुओं में से जितने चिरे या फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं, उन्हें खा सकते हो। [4]परन्तु पागुर करनेवाले या फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात् ऊँट, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है। [5]और शापान, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। [6]और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिये वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। [7]और सूअर, जो चिरे अर्थात् फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। [8]इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।"

शुद्धता के विषय परमेश्वर के निर्देशों का आरंभ शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के बारे में कहने से हुआ।[1]

आयत 1. सबसे पहले परिच्छेद पाठक को विश्वास दिलाता है कि इसके बाद आने वाली अनिवार्यताएं मौलिक रूप से परमेश्वर की ओर से आई थीं तथा **मूसा और हारून** को दी गई थीं। मूसा तो महान व्यवस्था का देने वाला था, हारून यहोवा द्वारा नियुक्त महायाजक था जिसे परमेश्वर के लोगों को इसके बाद आने वाले नियमों को सिखाना था।

आयतें 2, 3. पुराने नियम में, पशुओं को "शुद्ध" और "अशुद्ध" वर्गीकृत करना नूह के समय से है (उत्पत्ति 7:2, 3, 8; 8:20), परन्तु यहाँ दिए गए प्रकटीकरण से पहले कोई लिखित विवरण नहीं था कि किसी पशु को क्या "शुद्ध" बनाता है। यहोवा ने विवरण का आरंभ नियम की प्रतिपादन के साथ किया: पशु के इस्राएलियों के लिए खाने योग्य होने के लिए दो बातें आवश्यक थीं; अर्थात केवल वे ही पशु जिनमें ये दो बातें थीं वे "शुद्ध" कहकर वर्गीकृत किए जा सकते थे। ये दो गुण थे जो **चिरे या फटे खुर** के होते, और जो **पागुर करते** हैं। इसलिए शुद्ध पशुओं में वे भी सम्मिलित थे, इस्राएली जिनका बलिदान करते थे - गाए-बैल, भेड़, और बकरे - तथा वन-पशु जैसे कि मृग और चिंकारा।

व्यवस्थाविवरण 14 लैव्यव्यवस्था 11 के समानांतर है, और शुद्ध तथा अशुद्ध पशुओं के संबंध में है। उसमें निर्धारित किया गया है कि "जो पशु तुम खा सकते हो

वे ये हैं, अर्थात गाय-बैल, भेड़-बकरी, हरिण, चिंकारा, यखमूर, बनैली बकरी, सांबर, नीलगाय, और बैनेली भेड़" (व्यव. 14:4, 5) खाए जा सकते हैं।

आयतें 4-7. लेख इन नियमों को लागू करते हुए आगे बढ़ता है और स्पष्ट करता है कि क्यों कुछ पशु जिन्हें शुद्ध समझा जा सकता था वे वास्तव में अशुद्ध हैं। यहोवा ने सबसे पहले यह निर्धारित किया कि पशु के शुद्ध होने के लिए उसमें दोनों गुणों का होना आवश्यक था। उनमें से केवल एक ही गुण का होना पशु को शुद्ध वर्गीकृत करने के लिए काफ़ी नहीं था।

लेख आगे बताता है कि चार विशिष्ट पशु क्यों **अशुद्ध** थे: **ऊंट**, क्योंकि उसके चिरे खुर नहीं थे (11:4); **शापान**,[2] क्योंकि उसके चिरे खुर नहीं होते (11:5); **खरहा**,[3] क्योंकि उसके चिरे खुर नहीं होते (11:6); और **सूअर**, क्योंकि वह **पागुर नहीं करता** (11:7)।

आयत 8. यह नियम फिर कानून बनाकर कहा गया है। यहोवा ने कहा, **"इनके** [अशुद्ध] **मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं।"** इन शब्दों में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं: (1) कानूनी वाक्य - "इनके मांस में से कुछ न खाना" - का वही निश्चित स्वरूप है जो दस आज्ञाओं के अनेकों नियमों के वाक्य में है (जैसे कि "तू व्यभिचार न करना")। परमेश्वर इन नियमों के विषय गंभीर था। (2) किसी जीवित अशुद्ध जन्तु को छू लेने से कोई अशुद्ध नहीं हो जाता था। (यदि हो जाता, तो इस्राएली ऊँटों,[4] घोड़ों, या गधों की सवारी नहीं करने पाते।) परन्तु किसी मृतक अशुद्ध पशु को छू लेने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता था।[5]

श्रेणी 2: जलजन्तु (11:9-12)

[9]"फिर जितने जलजन्तु हैं उनमें से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात् समुद्र या नदियों के जलजन्तुओं में से जितनों के पंख और चोंयेटे होते हैं उन्हें खा सकते हो। [10]और जलचरी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोंयेटे के समुद्र या नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे लिये घृणित हैं। [11]वे तुम्हारे लिये घृणित ठहरें; तुम उनके मांस में से कुछ न खाना, और उनकी लोथों को अशुद्ध जानना। [12]जल में जिस किसी जन्तु के पंख और चोंयेटे नहीं होते वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है।"

यहोवा ने आगे शुद्ध और अशुद्ध जलजन्तुओं के बीच के अंतर को परिभाषित किया।

आयतें 9. जिस प्रकार शुद्ध पशुओं के दो गुण थे, जलजन्तु जो शुद्ध थे और इसलिए परमेश्वर के लोगों के द्वारा खाए जा सकते थे उनमें भी दो प्रगट गुण विद्यमान होने चाहिए थे: उनके **पंख** होने चाहिए थे, और उनके **चोंयेटे** होने चाहिए थे। यह नियम इस्राएलियों के भोजन से शेलफिश और ईल मछली को हटा देता है। आर. लैयर्ड हैरिस ने कहा कि शुद्ध जलजन्तु वे थे जो जल में उन्मुक्त तैरते थे, जबकि अशुद्ध जलजन्तु नीचे सतह पर रहने वाले होते थे।[6] यदि यही नियम आज उत्तरी अमेरिका में रहने वालों पर लागू किए जाते, तो वे लोग क्रैप्पी, ब्रीम, बास, और

ट्राउट तो खा सकते थे - परन्तु कैटफ़िश या शार्क नहीं क्योंकि इन मछलियों के चोंयेटे नहीं होते हैं।

आयतें 10-12. जलचरी प्राणियों में से कोई भी, जिसके **पंख और चोंयेटे नहीं थे** वे अशुद्ध थे। उसे **घृणित** और **अशुद्ध** मानना था। जिस प्रकार अशुद्ध थल पशुओं के साथ था, इस्राएलियों को इन अशुद्ध जलजन्तुओं को खाने से बच कर रहना था। यथार्थ में उन्हें उन को **घृणित** समझना था और उनकी लोथों को **अशुद्ध**।

श्रेणी 3: पक्षी (11:13-19)

[13]"फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएँ, अर्थात् उकाब, हड्फोड़, कुरर, [14]चील, और भाँति के बाज़, [15]और भाँति भाँति के सब काग, [16]शुतुर्मुर्ग, तखमास, जलकुक्कुट, और भाँति भाँति के शिकरे, [17]हबासिल, हाड़गील, उल्लू, [18]राजहंस, धनेश, गिद्ध, [19]लगलग, भाँति भाँति के बगुले, टिटीहरी और चमगादड़।"

इससे आगे परमेश्वर ने प्रकट किया कि कुछ पक्षी भी अशुद्ध थे।

आयतें 13-19. पक्षियों की अशुद्धता के विषय में यहोवा ने शुद्ध समझे जाने वाले पक्षियों की सूची बनाने की आवश्यकता नहीं समझी, और न ही उसने कोई कारण दिए कि क्यों कुछ पक्षी शुद्ध थे और अन्य अशुद्ध। वरन, उसने बीस प्रकार के अशुद्ध पक्षियों की सूची दे दी। कोई यह धारणा रख सकता है कि इस सूची में पाए जाने वाले पक्षियों में सामान्य गुण था कि वे सभी "मांसाहारी" थे। अर्थात, उनका भोजन मुख्यतः मृतक जन्तु (**उकाब**; 11:13), छोटे जीव (**बाज़ और उल्लू**; 11:14, 16), या जलजन्तु (**बगुले**; 11:19)। इस परिच्छेद में चार बार किसी पक्षी का नाम आया है और फिर उसके साथ उसके जैसे **भाँति भाँति के** आया है (11:14, 15, 16, 19)। प्रत्यक्षः, इस वाक्याँश का तात्पर्य यह विचार देना था कि उस प्रकार के सभी पक्षियों को अशुद्ध समझा जाना चाहिए।

चमगादड़, जो इस सूची में पाई जाती है (11:19), पक्षी नहीं है; वह स्तनधारी है। निश्चय ही परिच्छेद वैज्ञानिक रीति से सटीक होने से संबंधित नहीं है। चमगादड़ों में पक्षियों के बहुत से गुण होते हैं। इस अध्याय में दिए गए अन्य जन्तुओं के समान, यह जानना कठिन है कि लेख में प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों का वास्तविक अर्थ क्या है। यहाँ CEV का अनुवाद है "चीलें, गिद्ध, उकाब, कौवे, शुतुर्मुर्ग, बाज़, जलकुक्कुट, हबासिल, हाड़गील, उल्लू, राजहंस, धनेश, गिद्ध, लगलग, भाँति भाँति के बगुले, टिटीहरी और चमगादड़ सभी घिनौने हैं, और तुम्हारे लिए उन्हें खाना वर्जित है" (11:13-19)।

संभवतः इस्राएलियों को यह समझ लेना था कि जिस प्रकार के पक्षी का इस सूची में उल्लेख नहीं है वह शुद्ध है और खाया जा सकता है। इस सूची में अविद्यमान महत्वपूर्ण पक्षी हैं पाण्डुकी और कबूतर, जो प्रत्यक्षतः शुद्ध माने जाते थे क्योंकि वे मिलापवाले तम्बू में बलिदान के लिए चढ़ाए जा सकते थे।

श्रेणी 4: पंखवाले कीड़े (11:20-23)

[20]"जितने पंखवाले कीड़े चार पाँवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। [21]पर रेंगनेवाले और पंखवाले जो चार पाँवों के बल चलते हैं, जिनके भूमि पर कूदने फाँदने को टाँगें होती हैं उनको तो खा सकते हो, [22]वे ये हैं, अर्थात् भाँति भाँति की टिड्डी, भाँति भाँति के फनगे, भाँति भाँति के झिंगुर, और भाँति भाँति के टिड्डे। [23]परन्तु और सब रेंगनेवाले, पंखवाले कीड़े जो चार पाँववाले होते हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।"

यद्यपि वर्तमान पाठकों को यह भिन्नता विचित्र प्रतीत हो सकती है, नियम शुद्ध और अशुद्ध कीड़ों में भी अन्तर करते थे।

आयत 20. फिर से परमेश्वर ने नियम बताने के साथ आरंभ किया: **"जितने पंखवाले कीड़े चार पाँवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।"** इस आयत में (तथा आयत 21 और 23 में) "पंखवाले कीड़े" यथार्थ में "झुण्ड बनाने वाले पंख वाले" हैं। सामान्यतः कीड़े अशुद्ध थे और इसलिए उन्हें भोजन के लिए प्रयोग नहीं करना था।

आयतें 21, 22. इन दो आयतों में नियम के अपवाद पाए जाते हैं। **पंखवाले कीड़े** जिन्हें खाया जा सकता था ("शुद्ध" कीड़े) वे थे **भाँति भाँति की टिड्डी, भाँति भाँति के फनगे, भाँति भाँति के झिंगुर, और भाँति भाँति के टिड्डे**। कुछ अनुवादों (NRSV; ESV) में "फनगे" के स्थान पर "गंजे टिड्डे" आया है। चारों इब्रानी पारिभाषिक शब्दों को REB विभिन्न प्रकार की टिड्डियाँ अनुवादित करती है: "तुम इन सब को खा सकते हो, हर प्रकार के टिड्डे, हर प्रकार के लंबे सर वाले टिड्डे, हर प्रकार के हरे टिड्डे, और हर प्रकार के मरुभूमि के टिड्डे।"

संभव है कि पाठक का प्रत्युत्तर हो, "टिड्डों, झींगुरों और फनगों को कौन खाएगा?" वास्तविकता में लोग इन कीड़ों को सारे इतिहास में खाते चले आए हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का भोजन "टिड्डियां और बनमधु" था (मत्ती 3:4)। आर. के. हैरिसन ने ध्यान दिलाया कि, "भोजन के रूप में, टिड्डियों को निकट पूर्व में सैकड़ों वर्षों से खाया जाता रहा है। अंतिम अशूरी राजा, अशूर्बनिपाल (लगभग 669-627 ई.पू.), द्वारा दिए गए एक भोज के दृश्य में, सेवकों को डंडियों पर लगी टिड्डियों को खाने के लिए लाते हुए दिखाया गया है।"[7]

आयत 23. परिच्छेद का अन्त नियम के दोहराए जाने के द्वारा होता है, इस बात पर बल दिए जाने के साथ कि अन्य सभी कीड़े - विशेषतया, **सब रेंगनेवाले पंखवाले कीड़े जो चार पाँववाले होते हैं** - वे खाए जाने योग्य नहीं हैं, वे अशुद्ध हैं।

व्याख्याकर्ताओं ने ध्यान दिलाया है कि अशुद्ध भोजन के खाए जाने के लिए परमेश्वर ने कोई दण्ड निर्धारित नहीं किया। उन्होंने इस बात का भी ध्यान किया कि, इस खण्ड के अन्य नियमों के आधार पर, यह माना जा सकता है कि अशुद्ध भोजन खाने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है। फिर से शुद्ध होने के लिए, व्यक्ति को उन ही प्रक्रियाओं का पालन करना होता जिनके द्वारा यदि वह किसी अशुद्ध वस्तु

को छूने के बाद अशुद्ध हो जाता था, तो शुद्ध होता था।[8]

अशुद्ध हो जाना और उसके प्रति व्यवहार (11:24-40)

परिच्छेद का ध्यान कि क्या खाया जा सकता था और क्या नहीं से मुड़कर इस बात पर जाता है कि इस्राएली स्वयं कैसे अशुद्ध हो सकते थे। परमेश्वर ने उन्हें बताया कि यदि ऐसा हो जाए तो क्या करना होगा। इसके बाद के नियमों को तीन कथनों में संक्षिप्त किया जा सकता है। (1) मृतक अशुद्ध जन्तु की लोथ को छूने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है। (2) अशुद्धता का निवारण जल से धोया जाना और समय के बीत जाने की प्रतीक्षा करना था। (3) मृत पशु, वस्तुओं को दूषित करते थे, और दूषित हुई वस्तुओं को फिर शुद्ध करना होता था। यदि यह संभव नहीं होता, तो अशुद्ध वस्तु को नष्ट करना होता था।

अशुद्ध पशु से संपर्क के द्वारा (11:24-28)

[24]"इनके कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे; जिस किसी से इनकी लोथ छू जाए वह साँझ तक अशुद्ध ठहरे। [25]और जो कोई इनकी लोथ में का कुछ भी उठाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे। [26]फिर जितने पशु चिरे खुर के होते हैं परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और न पागुर करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा। [27]और चार पाँव के बल चलनेवालों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। [28]और जो कोई उनकी लोथ उठाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।"

आयतें 24, 25. ये आयतें सिखाती हैं कि मृतक अशुद्ध पशु के साथ संपर्क में आने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता था। **इनके कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे** संभवतः सभी अशुद्ध जीवित जंतुओं से संबंधित है - पशु, जलजन्तु, पक्षी, और पंखवाले कीड़े - जो 11:3-23 में सूचीबद्ध हैं। अभिव्यक्ति "तुम अशुद्ध ठहरोगे" को फिर अगले उपवाक्य द्वारा गुण-संपन्न किया गया है। इनसे तभी अशुद्ध होते थे यदि **किसी से इनकी लोथ छू जाए**। क्योंकि वस्त्रों का धोया जाना लोथ को उठाने के संदर्भ में आया है, इसलिए संभवतः समाधानों में कुछ भिन्नता थी। यदि कोई लोथ को छू भर लेता तो उसके वस्त्र उसमें संबंधित नहीं होते; परन्तु यदि वह उसे उठा लेता तो उसे **अपने वस्त्र धोए** जाने की आवश्यकता थी और साथ ही हाथों को भी। इनमें से किसी भी संभावना के होने पर, अशुद्ध वस्तु से हुए संपर्क के कारण दूषित हो जाते थे। जो प्रभावित हुआ था वह या तो **सांझ तक** प्रतीक्षा करे, या **साँझ तक अशुद्ध रहे**। अशुद्ध दशा में किसी को भी मिलापवाले तम्बू के क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी और न ही चढ़ावों को चढ़ाने में सम्मिलित होने की।

इस नियम से कुछ असुविधा तो होती थी, परन्तु प्रकट है कि धोना और प्रतीक्षा करना कोई कठोर दण्ड नहीं थे। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि

यहोवा, यद्यपि शुद्ध होने के विषय गंभीर था, परन्तु अनुष्ठानों से संबंधित अशुद्धता को वह उतना नापसंद नहीं करता था जितना कि, उदाहरण के लिए व्यभिचार को, जो मृत्यु दण्ड देने योग्य अपराध था।

आयत 26. यह आयत यह कहती प्रतीत होती है कि कोई भी यदि किसी **अशुद्ध** पशु को छू लेता (ऐसा पशु जिसमें शुद्ध पशु के दोनों गुण विद्यमान नहीं थे) तो वह **अशुद्ध** हो जाता। परन्तु, संभवतः, इस संदर्भ में नियम, अशुद्ध पशु की लोथ से संबंधित है।

आयतें 27, 28. अशुद्ध पशुओं की अगली श्रेणी जो व्यक्ति को अशुद्ध बना सकती थी वे चार पाँव तथा पंजों के बल चलने वाले पशु - जैसे कि कुत्ते, सिंह, और भालू थे। जैसा कि अन्य पशुओं के साथ था, इन्हें छू लेने से अशुद्धता नहीं होती थी, परन्तु उनकी लोथ को छू लेने या **उनकी लोथ** उठाने से होती थी। इस प्रकार की अशुद्धता का निवारण अपने **वस्त्रों** को धोना और **सांझ तक** प्रतीक्षा करना था, जब नए दिन का आरंभ होता था।

झुण्ड बनाने वाली अशुद्ध वस्तुओं के संपर्क में आने के द्वारा (11:29-38)

29"जो पृथ्वी पर रेंगते हैं उनमें से ये रेंगनेवाले तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, अर्थात् नेवला, चूहा, और भाँति भाँति के गोह, 30और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और गिरगिटान। 31सब रेंगनेवालों में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई इनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। 32और इनमें से किसी की लोथ जिस किसी वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे, चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे वस्त्र, चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी काम का कैसा ही पात्र आदि क्यों न हो; वह जल में डाला जाए, और साँझ तक अशुद्ध रहे, तब शुद्ध समझा जाए। 33और यदि मिट्टी का कोई पात्र हो जिसमें इन जन्तुओं में से कोई पड़े, तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़ डालना। 34उसमें जो खाने के योग्य भोजन हो, जिसमें पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे; फिर यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे। 35और यदि इनकी लोथ में का कुछ तंदूर या चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे, और तोड़ डाला जाए; क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिये भी अशुद्ध ठहरे। 36परन्तु सोता या तालाब जिसमें जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे; परन्तु जो कोई इनकी लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे। 37और यदि इनकी लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहे; 38पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए, तो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरे।"

परिच्छेद का यह भाग अशुद्ध वस्तुओं की एक अन्य श्रेणी का परिचय करवाती है: "झुण्ड बनाने वाले" जंतु ("रेंगनेवाली" वस्तुएँ; KJV)। आयत 42 इन्हें और आगे परिभाषित करती है "सब रेंगनेवालों में से जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते

हैं, या अधिक पाँववाले होते हैं," तथा (इसमें निहित है कि) जो कोई भी "पृथ्वी पर रेंगते हैं।"[9]

आयतें 29, 30. लेख सबसे पहले **रेंगनेवालों** के उदाहरण देता है: **नेवला, चूहा, और भाँति भाँति के गोह, और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और गिरगिटान।** इन पारिभाषिक शब्दों के द्वारा ऐसा किन पशुओं के लिए कहा गया है, यह अनिश्चित है। NIV कहती है, "जो जंतु पृथ्वी पर रेंग कर चलते हैं, उनमें से तुम्हारे लिए ये अशुद्ध हैं: नेवला, चूहा, और भाँति भाँति के गोह, और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और गिरगिटान।" यहोवा ने कहा, ये सब, **अशुद्ध** हैं; उन्हें खाना वर्जित था।

आयत 31. यहोवा ने यहाँ एक परिचित विषय की पुनः अभिव्यक्ति की: यदि कोई इनमें से किसी भी **अशुद्ध रेंगने वाले** वस्तु की लोथ को छू लेता तो वह **साँझ तक अशुद्ध रहे।**

आयत 32. इन मृतक रेंगने वाली वस्तुओं से आने वाली अशुद्धता न केवल मनुष्यों को प्रभावित करती थी; वह जिस किसी वस्तु को छू लेती, उसे दूषित कर देती - **चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे वस्त्र, चाहे खाल, चाहे बोरा**, चाहे और कुछ भी हो। यदि किसी अशुद्ध रेंगने वाली वस्तु के साथ कोई वस्तु संपर्क में आती तो उसे धोया जाना था और उसे **सांझ तक अशुद्ध** समझा जाना था। उसके पश्चात वह फिर से प्रयोग की जा सकती थी।

आयत 33. यदि कोई अशुद्ध रेंगनेवाला जंतु **किसी मिट्टी के पात्र** में पड़ जाए तो, जिसे भी वह छूए वह **अशुद्ध** ठहरे, और उस **पात्र को** नाश करना होता था। सामान्यतः धोए जाने से अशुद्धता का संक्रमण दूर हो जाता था, परन्तु यह नियम इस धारणा को लेकर चलता है कि मिट्टी के पात्रों के सूक्ष्म छिद्र उसे संपूर्ण रीति से साफ़ होने से वंचित रखेंगे। इसलिए उस पात्र को नष्ट करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं था (देखिए 6:28)।

आयत 34. भोजन जिस पर दूषित **पानी** पड़ जाए वह **अशुद्ध ठहरे**; इसी प्रकार, **यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे**, इन जंतुओं से हुए अप्रत्यक्ष संपर्क के कारण। संदर्भ के अन्तर्गत, यह आयत कह रही है कि वह पानी, या कोई भी अन्य द्रव्य जो किसी ऐसे पात्र में है जो अशुद्ध रेंगने वाले किसी जन्तु की लोथ से दूषित हो गया है, अशुद्ध है, और भोजन जो ऐसे दूषित पात्र के जल के साथ संपर्क में आता है वह भी अशुद्ध है।

आयतें 35-38. इसके पश्चात रेंगनेवाली अशुद्ध वस्तुओं से संबंधित अनेकों विशेष परिस्थितियाँ बताई गई हैं।

प्रश्न: क्या हो यदि अशुद्ध रेंगनेवाली वस्तु की पूरी लोथ अथवा **लोथ में का कुछ तंदूर या चूल्हे पर पड़े?**

11:35 से उत्तर: वह तंदूर या चूल्हा सदा के लिए दूषित माना जाए और उसे तोड़ डाला जाए।

प्रश्न: यदि किसी अशुद्ध रेंगनेवाली वस्तु की **लोथ** किसी **सोते या तालाब** को

छू ले तो क्या हो? क्या वह सोता या तालाब भी अशुद्ध और मनुष्यों के उपयोग के लिए अयोग्य हो जाएगा?

11:36 से उत्तर: नहीं, वह सोता या तालाब फिर भी उपयोग किया जा सकता था; किसी अशुद्ध वस्तु के संपर्क में आने से वह अशुद्ध नहीं हो जाता। संभवतः उसके अशुद्ध न होने का कारण था कि सोते या तालाब का पानी लगातार बदलता रहता था, जिससे दूषित होना भी शीघ्र ही निकल जाता।[10]

प्रश्न: क्या हो यदि किसी अशुद्ध रेंगनेवाली वस्तु की **लोथ में का कुछ भाग** किसान द्वारा बोए जाने वाले **बीज** को छू जाए? क्या वह बीज अशुद्ध हो जाएगा? क्या उसे फेंक देना पड़ेगा?

11:37, 38 से उत्तर: यह निर्भर करता था। यदि किसी रेंगनेवाली अशुद्ध वस्तु की लोथ से बीज केवल छूआ ही गया है, तो भी वह **शुद्ध** ही ठहरेगा, और संभवतः उसे बोया जा सकता था। परन्तु यदि वह अशुद्ध वस्तु के द्वारा छूआ गया और फिर **जल** द्वारा, या अशुद्ध जल के द्वारा, छूआ जाए, तो वह **अशुद्ध** ठहरेगा और उसे फेंकना पड़ेगा।

शुद्ध पशु की लोथ को छू लेने के द्वारा (11:39, 40)

39"फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उनमें से कोई पशु मरे, तो जो कोई उनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। 40और उसकी लोथ में से जो कोई कुछ खाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई उसकी लोथ उठाए वह भी अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे।"

आयतें 39, 40. जिन कारणों से अशुद्धता होती थी, उस चर्चा के अंतर्गत अंतिम मामला ऐसे शुद्ध पशु की मृत्यु का था जिसे इस्राएली **खाने** के लिए लेते थे। जिस पशु का उल्लेख किया जा रहा है वह बलिदान या भोजन के लिए मारा नहीं गया था; वरन वह किसी अन्य विधि से मरा था। दूसरे शब्दों में, वह "प्राकृतिक मृत्यु" से मरा था। ऐसे की लोथ के संपर्क में आना, उसकी **लोथ का कुछ खाना**, या उसे उठा कर हटाना, व्यक्ति को **अशुद्ध** कर देता था। इस अशुद्धता के लिए निर्धारित उपाय था कि अशुद्ध व्यक्ति अपने **वस्त्र धोए** और **साँझ तक अशुद्ध रहे।**

जन्तुओं से संबंधित आवश्यकताओं के कारण: पवित्रता (11:41-45)

41"सब प्रकार के पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु घिनौने हैं; वे खाए न जाएँ। 42पृथ्वी पर सब रेंगनेवालों में से जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं, या अधिक पाँववाले होते हैं, उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे घिनौने हैं। 43तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा अपने आप को घिनौना न करना; और न उनके द्वारा अपने को अशुद्ध करके अपवित्र ठहरना। 44क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। इसलिये तुम

किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना। 45क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिये तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

आयतें 41-43. संभवतः सबसे कठोर भाषा में, इन आयतों में व्यवस्था परमेश्वर के लोगों को इस पृथ्वी पर विद्यमान किसी भी रेंगनेवाली वस्तु को खाने से वर्जित करती थी। इस्राएलियों के लिए ऐसे सभी जन्तु **घिनौने** होने थे। उन्हें खाने के द्वारा अपने आप को **अशुद्ध** और **अपवित्र** करने से बचने की आज्ञा देने से पहले यहोवा ने "रेंगनेवाले जन्तुओं" को और अतिरिक्त परिभाषित किया।

आयतें 44, 45. अनुष्ठानों के अनुसार शुद्धता संबंधी महत्वहीन प्रतीत होने वाले नियमों के देने के पश्चात, यहोवा ने इन निर्देशों के कारणों को बताते हुए अपने स्वभाव तथा अपने लोगों के साथ अपने संबंध के विषय बहुत गंभीर बात कही। संक्षेप में, परमेश्वर के तर्क इस प्रकार थे: (1) "मैं पवित्र हूँ"; (2) "मेरी पवित्रता के कारण, तुम्हें [इस्राएलियों को] पवित्र होना है"; (3) "पवित्र होने के लिए तुम्हें [इस्राएलियों को] शुद्धता से संबंधित इन नियमों का पालन करना है; तुम्हें अनुष्ठान अनुसार शुद्ध बने रहने के लिए भरसक प्रयास करना है!"

आयतें 44 और 45 परिवर्तन शैली की रचना दिखाते हैं:

A1: **"क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"**

B: **"इसलिये तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना।"**

A2: **"क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिये तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"**

इन दोनों आयतों के पहले और अंतिम वाक्य लगभग वही बात कहते हैं। इस प्रकार की रचना का प्रयोग व्यत्यासिका के मध्य के कथन पर ध्यान आकर्षित करने के लिए किया जाता है। प्रभावी रूप में, उस मध्य कथन में, यहोवा ने दो बार जन्तुओं से संबंधित निर्देशों का कारण दिया - एक बार नियम से पहले, और फिर से उसके बाद।

यहोवा इस बात पर बल दे रहा था कि उसकी पवित्रता के कारण उसके लोगों को भी पवित्र होना है - पृथक, शुद्ध किए हुए, और उसके लिए समर्पित! अपने शुद्ध होने के दर्जे को प्रदर्शित करने की एक विधि थी, वे परमेश्वर द्वारा "अशुद्ध" ठहराई गई रेंगनेवाली वस्तुओं को न खाएं।

एक सार (11:46, 47)

जैसा कि एक अच्छी व्याख्या को करना चाहिए, अशुद्ध और अशुद्ध करने वाले जन्तुओं से संबंधित इस खण्ड का अन्त एक सार के साथ होता है।

46पशुओं, पक्षियों, और सब जलचरी प्राणियों, और पृथ्वी पर सब रेंगनेवाले प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है, 47कि शुद्ध अशुद्ध और भक्ष्य और अभक्ष्य जीवधारियों में भेद किया जाए।

आयतें 46, 47. यहोवा ने कहा कि, इससे पहले की चर्चा का उद्देश्य था कि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन से जन्तु **शुद्ध** थे और कौन से **अशुद्ध**। उसने इनकी भिन्नता को स्पष्ट किया, जिससे इस्राएली जान लें कि कौन से जन्तु **भक्ष्य** थे (शुद्ध जन्तु) और कौन से **अभक्ष्य** थे (अशुद्ध जन्तु)।

ये अशुद्ध जन्तु किसी को पापी नहीं बनाते थे। किसी अशुद्ध जन्तु की लोथ से संपर्क से अशुद्ध हो जाने के पश्चात शुद्ध होने के लिए जो आवश्यक था वह था धोना और संध्या तक प्रतीक्षा करना।

अध्याय 11 में शुद्धता संबंधी इन नियमों के कारण

शुद्ध और अशुद्ध जन्तुओं से संबंधित इन नियमों को समझने के प्रयास करने के पश्चात, प्रश्न बना रहता है कि इस अध्याय में शुद्धता से संबंधित नियमों का कारण क्या था?

कई संभावनाएं व्यक्त की गई हैं: (1) संभवतः इन नियमों के द्वारा इस्राएलियों को मूर्तिपूजा से निकटता से जुड़ी हुई कुछ रीतियों से बचने में सहायता मिलती थी। (2) हो सकता है कि उनका उद्देश्य मुख्यतः परमेश्वर के लोगों को अन्य लोगों से पृथक जताने के लिए था। बाद के समयों में एक यहूदी वह समझा जाता था, जो अन्य बातों के अतिरिक्त, कुछ प्रकार के भोजन नहीं खाता था। (3) एक अन्य संभावना, बाइबल के विद्वान जिसका उचित रीति से बचाव करते हैं, यह थी कि इन नियमों के द्वारा इस्राएलियों की सामान्य भलाई को बढ़ावा मिलता था। उदाहरण के लिए, कुछ जन्तुओं को अशुद्ध कह देने के द्वारा परमेश्वर के लोग रोगों को फैलाने वाले जन्तुओं से सुरक्षित रहते थे। मृतक जन्तु को छूना वर्जित करने वाले नियम संक्रमण और बीमारियों को फैलने से रोकने में सहायता करते थे। व्याख्याकर्ताओं ने इन नियमों को परमेश्वर द्वारा इस्राएल से निर्गमन15:26 में की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने की एक विधि भी माना है:

> "कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजे हैं उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं।"[11]

इस अध्याय के "क्यों" के विषय में जो हम निश्चित रीति से जानते हैं वह परमेश्वर द्वारा 11:41-45 में कही गई बात है।[12] वहाँ हम सीखते हैं कि शुद्धता/अशुद्धता से संबंधित नियमों के पालन करने से किसी रीति से परमेश्वर के लोगों में पवित्रता को बढ़ावा मिलता था। शुद्धता और पवित्रता एक ही बात नहीं हैं, परन्तु सदा अशुद्ध बने रहने वाले लोग, पवित्र जन नहीं हो सकते थे। इस्राएलियों को शुद्धता के नियमों का पालन करना होता था, परमेश्वर के पवित्र जन बनने, या बने रहने के लिए। चाहे हम कारणों को न भी समझ पाएँ, हम यह विश्वास रख सकते हैं कि परमेश्वर के सभी नियम मनुष्यों की भलाई के लिए दिए गए। परिणामस्वरूप, हम निश्चित रह सकते हैं कि लैव्यव्यवस्था 11-15 में दिए गए शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित नियमों का पालन करना इस्राएल के लिए भला था।

अनुप्रयोग

स्वस्थ जीवन के लिए संकेत (अध्याय 11)

यदि, जैसा कि देखा गया है, शुद्ध और अशुद्ध होने के नियमों का एक उद्देश्य इस्राएलियों की सामान्य भलाई और स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था, तो संभव है कि मसीही आज इन आवश्यकताओं से अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुछ सीख सकते हैं। अवश्य ही ये नियम - पुराने नियम में पाए जाने वाले किन्तु नए नियम नहीं दोहराए गए अन्य नियमों के समान - मार्ग से हटा दिए गए हैं (कुलु. 2:14)। वे अब मसीहियों पर (या अन्यों पर) सीधे-सीधे लागू नहीं होते हैं। किन्तु फिर भी उनसे सुझाव मिलता है कि परमेश्वर अपने लोगों के स्वास्थ्य और भलाई में रुचि रखता है, और इन से इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अच्छे परामर्श मिलते हैं। हम लैव्यव्यवस्था 11-15 में निहित सिद्धांतों को "स्वस्थ जीवन के लिए संकेत" कह सकते हैं। परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों से हम परामर्श के क्या शब्द निकाल सकते हैं? उनसे अधिक स्वास्थ्य बने रहने के लिए हमें कम से कम तीन व्यवहारों का सुझाव मिलता है।

स्वस्थ भोजन खाना। परमेश्वर अब "शुद्ध" और "अशुद्ध" भोजन में भिन्नता नहीं करता है, और न ही लैव्यव्यवस्था 11 में दिए गए विशिष्ट नियम आज लागू होते हैं। (उदाहरण के लिए, हम कैटफ़िश खा सकते हैं!) किन्तु फिर भी इस्राएलियों द्वारा खाई जाने वाली वस्तुओं को लेकर परमेश्वर की चिंता से हम समझ सकते हैं कि हमें भी केवल स्वस्थ भोजन वस्तुएँ ही खानी चाहिएँ।

अपने वातावरण को स्वच्छ रखना। लैव्यव्यवस्था में "धोने" पर दिया गया बल प्रकट है। जिस किसी ने अशुद्ध लोथ को छुआ उसे शुद्ध होने के लिए अपने आप को धोना था। जो कोई अशुद्धता के संपर्क में आता था उसे अपने वस्त्र धोने थे। घर के काम की वस्तुएँ, यदि अशुद्ध के संपर्क में आ जाती तो उन्हें धोना या नष्ट करना था। जिसके प्रमेह होता, उसे शुद्ध होने के लिए धोना था। धोना अनुष्ठान अनुसार अशुद्धता को हटाने के लिए आवश्यक था।

आधुनिक विज्ञान धोने के महत्व के साथ सहमत है - अनुष्ठान अनुसार अशुद्धता हटाने के लिए नहीं, परन्तु संक्रमण को फैलाने वाली वस्तुओं को हटाने के लिए। हम में से अधिकांश ने यह सुन रखा है कि ज़ुकाम अथवा फ़्लू से बचने के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य हम कर सकते हैं वह है अपने हाथों को बारंबार धोते रहना।

हाल ही के वर्षों में, टेलीविज़न के समाचार कार्यक्रमों में कहा गया कि अग्नि-शमन दस्तों में कार्य करने वाले लोग कुछ प्रकार के कैंसरों से ग्रसित होने की अधिक संभावना रखते हैं। क्यों? क्योंकि आग बुझाने के अपने कार्य में वे आग और धुएं से संबंधित कुछ कैंसर उत्पन्न करने वाले पदार्थों के संपर्क में आते रहते हैं। उनके मुख्य-अधिकारी ने बताया था कि, स्थानीय अग्नि-शमन कार्यकर्ताओं के लिए इसका निवारण, प्रत्येक उपयोग के पश्चात उन अग्नि-शमन कार्यकर्ताओं द्वारा उपयोग किए गए सामान को धोकर उन लोगों के रहने के स्थान से पृथक टांगा जाए। (अग्नि-शमन कार्यकर्ताओं को भी प्रत्येक आग या धुएं के संपर्क में आने के पश्चात अपने आप को धोना होगा।) प्रस्तावित निर्देशों के अनुसार, अग्नि-शमन कार्यकर्ताओं के कैंसर से बचाव में धोने की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

यदि हमें स्वस्थ रहना है तो हमें अपने वातावरण को भी, जिसमें हम निवास करते हैं, स्वच्छ रखना होगा। स्वच्छता यथार्थ में "धार्मिकता के समान" तो नहीं है (जैसा कि एक आम कहावत दावा करती है), परन्तु अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अवश्य है।

अपने आप को दूषित करने वाले वस्तुओं से पृथक रखना। लैव्यव्यवस्था के इस भाग में, हम किसी भी "अशुद्ध" वस्तु से संबंधित विचारों में अनेकों बार पाते हैं कि - चाहे व्यक्ति हों या वस्तुएँ - उन्हें कुछ समय के लिए पृथक कर देना चाहिए। यह आज भी एक अच्छा विचार है कि किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे छूत का रोग हो, उसे औरों से पृथक कर दिया जाए। मूसा के नियमों के अन्तर्गत, यदि किसी को "कोढ़" (किसी भी प्रकार का चर्मरोग) होता तो उसे औरों से पृथक कर देना था जिससे औरों को वह रोग न लगे। जब तक रोग बना रहता, उसे औरों से पृथक ही रहना था।

आज सर्वत्र इन सावधानी के उपायों की बुद्धिमता की पहचान हुई है। उदाहरण के लिए, यदि किसी रोगी को घातक वायरस का संक्रमण है, तो उसे अस्पताल के पृथक किए गए रोगियों के वार्ड में रखा जाता है। चिकित्सक और अस्पताल अन्य संक्रमण रोगों के साथ भी इसी प्रकार से व्यवहार करते हैं। अपने व्यक्तिगत जीवनों में, हमें ऐसे ही उपाय अपनाने चाहिए जिससे औरों से हमें रोग न लगें। इसी प्रकार जब हमें कोई छूत का रोग हो तो हमें भी अपने आप को पृथक कर लेना चाहिए।

यदि उन्हें माना जाए, तो लैव्यव्यवस्था 11-15 के विचार हम सब की अधिक स्वस्थ जीवन व्यतीत करने में सहायता करेंगे। लेकिन इन विचारों के संबंध में हमें तीन अन्य बातों का ध्यान रखना होगा।

मसीहियों को आज पुराने नियम के किसी भी नियम को मानने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है। हम यह सोच सकते हैं कि "अशुद्ध" भोजन वस्तुओं से

संबंधित नियम, उदाहरण के लिए, हमारे लिए केकड़े या बेकन के खाने को अनुपयुक्त ठहरा सकते हैं; परन्तु हम इन नियमों को किसी पर भी पवित्र-शास्त्र के निर्देश कहकर बाध्य नहीं कर सकते हैं।

मसीहियों के पास बाइबल से कारण हैं कि वे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए चिंता करें, परन्तु नए नियम में स्वस्थ रहने के लिए कोई अकाट्य नियम नहीं हैं। मसीही को अपने स्वास्थ्य के विषय चिन्तित रहना चाहिए क्योंकि उसकी देह "पवित्र-आत्मा का मंदिर है" (1 कुरि. 6:19, 20) और क्योंकि उसे अपनी देह को "जीवित ... बलिदान" करके परमेश्वर को अर्पित करना है (रोमियों 12:1)। किन्तु नया नियम इस बात का विवरण नहीं देता है कि हमें किस प्रकार अपने शरीरों को स्वस्थ रखना है। परमेश्वर ने यह हमारे ऊपर छोड़ दिया है कि हम ऐसा करने के सर्वोत्तम उपायों की स्वयं खोज करें।

बाइबल का केन्द्र बिंदु हमारे भौतिक शरीरों की देखभाल से कहीं अधिक महत्वपूर्ण अन्य विषय पर है: हमारी आत्माओं का पाप से बचाया जाना, जिससे हम स्वर्ग जा सकें! इसलिए हमें स्वस्थ जीवन के इन सुझावों को उनके उचित परिप्रेक्ष्य में रखना चाहिए। पृथ्वी पर स्वस्थ जीवन जीना अच्छा है; परन्तु आत्मिक जीवन जीना और भी भला है, और स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करना सर्वोत्तम है।

समाप्ति नोट्स

[1]जिन "पशुओं" के बारे में अध्याय की आरंभिक कुछ आयतों में कहा गया है उन्हें व्याख्याकर्ताओं द्वारा कभी-कभी "चौपाए" कहकर वर्गीकृत किया जाता है, अर्थात उनके चार पाँव हैं। [2]"शापान" एक छोटा, शर्मीला, रोएंदार पशु (*हाएरैक्स सिर्याक्स*) है जो सीनै के प्रायद्वीप, उत्तरी इस्राएल, और मृतक सागर के आस-पास के क्षेत्र में पाया जाता है। इसका अनुवाद "कोनी" (KJV; NJB) और "रौक बैजर" (NRSV; REB) भी हुआ है। कुछ ने इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि न तो खरहे और न ही शापान गाए-बैलों के समान पागुर करते हैं; वे वास्तविक पागुर करने वाले नहीं हैं। परन्तु जिस प्रकार से वे करते हैं उससे आभास होता है कि वे पागुर कर रहे हैं। लेख विज्ञान की सूक्ष्मता का दावा नहीं करता है; वह मात्र किसी देखने वाले के लिए शुद्ध पशु को पहचानना संभव करता है। [3]"खरहा" का अनुवाद "खरगोश" (NRSV; NJB; REB) भी किया जा सकता है। [4]मिस्र से इसराएलियों के निकलने के समय से लेकर उनके वाचा के देश को जीत कर उसमें बस जाने तक ऊँट उनके लिए बोझ उठाने का कोई महत्वपूर्ण साधन नहीं था। [5]"जब तक वे जीवित थे, तब तक किसी वर्जित श्रेणी के पशु से संपर्क मात्र व्यक्ति को दूषित नहीं करता था।" (जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज [सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988], 167)। [6]आर. लैयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वोल. 2, *उत्पत्ति - गिनती* में, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1990), 572. [7]आर. के. हैरिसान, *लैव्यव्यवस्था,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर वर्सिटी प्रैस, 1980), 129. [8]देखिए जेकब मिलग्रोम, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था," *द इन्टरप्रेटर्स वन वॉल्युम कॉमेन्ट्री ओं द बाइबल*, एड. चार्ल्स एम. लेमौन (नैशविले: एबिंगडन प्रैस, 1971), 75. [9]रॉय गेन ने "पृथ्वी पर रेंगने वालों" को ऐसे परिभाषित किया: वे जंतु जिनका "चलना धरती के निकट होकर होता है: प्रमुखतः सरीसृप जीव, किन्तु कुछ कुतरने वाले भी (चूहे), और नीची काठी के स्तनधारी (नेवला)" (रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्प्लिकेशन कॉमेन्ट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवैन, 2004], 206)। हैरिसन ने कहा कि 11:42 "*रेंगनेवालों* की श्रेणी को और वृहद करता है

और उसमें कीड़ों, साँपों, छिपकलियों, कृमियों/गिन्डारों, इल्लियों और इनके जैसे अन्य को भी सम्मिलित कर लेता है" (हैरिसन, 132)। [10]क्लाईड एम. वुड्स एण्ड जस्टिन एम. रॉजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रैस NIV कॉमेन्ट्री (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रेस पबलिशिंग को., 2006), 87. यदि कोई मृतक रेंगने वाली वस्तु जल के स्त्रोत को दूषित कर देती, तो सभी सोते और तालाब अशुद्ध हो जाते, क्योंकि अशुद्ध जंतुओं को उनसे बाहर रखना असंभव होता।

[11]हैरिसन ने इस दृष्टिकोण के समर्थन में लिखा (हैरिसन, 121-30), और हैरिस ने भी (हैरिस, 569). [12]लैव्यव्यवस्था 15:31 में अध्याय 15 में दिए गए शुद्धता संबंधी नियमों का एक कारण मिलता है।

शुद्ध और अशुद्ध जन्तुओं को परिभाषित करना

श्रेणी	*शुद्ध*	*अशुद्ध*
पशु (लैव्यव्यवस्था 11:3-8; व्यवस्थाविवरण 14:6-8)	दो मानदंड: 1. फटे खुरवाले 2. पागुर करनेवाले	जो शुद्धता के दोनों मानदंडों को पूरा नहीं करते
मछली (लैव्यव्यवस्था 11:9-12; व्यवस्थाविवरण 14:9, 10)	दो मानदंड: 1. पंख 2. चोंयेटे	जो शुद्धता के दोनों मानदंडों को पूरा नहीं करते
पक्षी (लैव्यव्यवस्था 11:13-19; व्यवस्थाविवरण 14:11-20)	जो कोई विशेष रूप से वर्जित नहीं है	माँसाहारी पक्षी; मुर्दाखोर
पंखवाले कीड़े (लैव्यव्यवस्था 11:20-23)	जो टिड्डियों की जाति के हैं	जो चार पाँवों के बल चलते हैं
रेंगनेवाले जंतु (लैव्यव्यवस्था 11:29, 30)	कोई नहीं	सब